International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232, Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2016; Page No. 13-15

स्त्री अस्मिता के परिप्रेक्ष्य में शहरी परिवेश (मैत्रेयी पुष्पा के 'विज़न' उपन्यास के सन्दर्भ में)

डॉ0 भारत भूषण

अध्यक्ष, स्नात्तकोतर हिन्दी विभाग, गुरु नानक कालेज, किल्लियांवाली, श्री मुक्तसर साहिब–151211 (पंजाब) भारत।

प्रस्तावना

समकालीन कथा लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसा सशक्त हस्ताक्षर है, जिसने नारी चेतना को लेकर उच्चकोटि का कथा–साहित्य हिन्दी को दिया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में अलीगढ़, बुन्देलखण्ड और दिल्ली के जन–जीवन को बड़ी मार्मिकता के साथ वर्णन किया है। मैत्रेयी पुष्पा ने अपने कथा साहित्य में नारी से संबंधित कुछ मूलभूत प्रश्नों को उठाकर उनके आलोक में बदलते परिवेश बदलती स्त्री और बदलते मानदण्डो द्वारा नारी अस्मिता को रेखांकित किया है। मैत्रेयी का लेखन स्त्री को अपने पक्ष में खुद लड़ना और खुद ही खड़े होना सिखाता है। उनके कथा–साहित्य में नारी पात्रों में स्वतंत्रता की तड़प और संघर्ष तथाकथित सभ्य–शिक्षित महानगरीय महिला वर्ग से उत्पन्न होकर ग्रामीण समाज के यथार्थ की देन है।

मैत्रेयी पुष्पा का उपन्यास 'विजन' सन् 2002 में प्रकाशित शहरी पृष्ठभूमि पर आधारित उपन्यास है। यह उपन्यास 10 अध्यायों में विभाजित है। यह उपन्यास गहरी अंतदृष्टि का परिचय देता हुआ समाज के वर्तमान सच को हू–ब–हू उजागर करता है। इस उपन्यास में हमारे आस–पास बिखरी रोजमर्रा की जिन्दगी से उठाई गई अति परिचित घटनाएँ, खबरें, पात्र–वृत्तियां, समस्याएँ, सवाल आदि प्रदर्शित हैं। मैत्रेयी पुष्पा ने दिल्ली में गुजारी जिन्दगी 30–32 वर्षों के साथ नेत्र चिकित्सा के एक विशेष क्षेत्र को 'विजन' उपन्यास में चित्रित किया है। इस उपन्यास में महानगरीय दिल्ली के पॉश अस्पतालों के चमकते कॉरीडोर, जीन्स और ऍप्रन पहने, स्टेथोस्कोप लटकाए डॉक्टर–डॉक्टरनीयां... मोबाईल फोन और ए0सी0 गाड़ियां... पहली बार उनक`लेखन में आए हैं।

'विजन' उपन्यास प्राईवेट चिकित्सा संस्थाओं में गहराती धांधली, अराजकता और अमानुषिकता के अंडरवर्ल्ड को बेनकाब करता है। 'विजन' उपन्यास की मुख्य पात्र डॉ0 नेहा व डॉ0 आभा हैं। डॉ0 नेहा की शादी डॉ0 शरण के बेटे अजय के साथ हो जाती है। डॉ0 शरण अपने पुत्र अजय की पढ़ाई डोनेशन पर करते हैं। डॉ0 शरण एक कुशल डाक्टर हैं जो अपने बेटे के लिए एक डिग्री खरीदवा देते हैं। उनका योग्यता से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। जिसके बारे में आभा के शब्दों में यह ब्यान है, ''बड़े बाप का बेटा बड़ी रकम की थैली लेकर डॉक्टर बनने गया, क्योंकि बाप के आई सेन्टर का वारिस जो बनना है। वारिस और सर्जन में बहुत फर्क होता है। डाक्टर की डिग्री चिपका लेना ही काफी नहीं होता है।''[1] डॉ0 नेहा विवाह के प्रस्ताव को ठुकराना चाहती है। वह जिन्दगी भर डोनेशन लेकर डिग्री प्राप्त करने वाले अजय का वर के रुप में वरण करके शर्मनाक जिन्दगी नहीं ढोना चाहती है। डॉ0 नेहा डोनेशन के बल पर प्रतिभाओं के साथ होने वाले अन्याय के बारे में सोचती हुई इसे भ्रष्टाचार मानती है। डॉ0 नेहा अपने माता–पिता से अजय के साथ शादी करने से मना करती है लेकिन माता–पिता के दवाब देने से अजय की शादी डॉ0 नेहा से हो जाती है। ससुराल में उसे आगे पढ़ने से रोक दिया जाता है। एक प्रतिभाशाली नेत्र सर्जन के रुप में नाम कमाने के सपने में बंधी नेहा शरण खानदान की बहू बनकर अपने को पिंजरे में बंद परकटी बुलबुल अधिक महसूस करती है। ''डॉ0 होने के नाते वह उस परिवार के लिये पदक जैसी है। शी इज अ मैडल। देखने दिखाने भर की चीज.... नहीं, चीज बना दी है, डॉ0 आर0 पी0 शरण ने।''[2] डॉ0 नेहा बाहर नौकरी करना चाहती है। वह अपने ससुर के शरण आई सेन्टर में काम करना नहीं चाहती क्योंकि उसे स्त्री होने के कारण महत्वपूर्ण काम करने नहीं दिया जाता है जबकि वह प्रतिभावान डाक्टर है। डॉ0 राजी सेठ का कहना है –''स्त्री की चुनौती अपने समीकरण को छोड़कर पुरुष के समीकरण को पाना नहीं बल्कि अपने सत्य में से वृहत सत्य की परिधि तक जाना है।''[3] डॉ0 नेहा संसार से बाहर, सेवा की निपुणता दिखाकर कुशलता दिखाकर डॉ0 शरण के घर परिवार को प्रभावित करने के लिए झोंक रही थी। इतना सबकुछ करने पर भी उसे दोयम दर्जे की माना जाता है। डॉ0 नेहा सोचती है –''मैं एक अच्छे सर्जन की खासियतों से लैस हूँ। आपरेशन के आधुनिक स्ट्रैप्स मेरी उंगलियों पर है। स्मरण शक्ति अचूक है। फिर क्या कमी है कि डॉक्टर आर0 पी0 शरण की आंखों में डॉ0 नेहा का दर्जा अजय के मुकाबले दोयम है, क्यों ?''[4] डॉ0 नेहा मानती है कि उसे कार्य करने की स्वतंत्रता दे दी जाए तो वह अपना समाज में सम्मानजनक स्थान पा सकती है। ''डॉ0 शंकर प्रसाद के शब्दों में –''औरत न पहेली है, न जादू की छड़ी, बस औरत है जो किसी भी स्थिति और किसी भी परिस्थिति में पुरुष से अपने को हीनतर प्राणी मानने के लिए तैयार नहीं।''[5] डॉ0 आर0 पी0 शरण अपने अस्पताल में मरीजों का शोषण करते हैं। डॉ0 नेहा अपने ससुर की शिकायत अपने पति अजय से करते हुए कहती है, ''तुम अपने पापा से यह बात जुबानी कहना कि मरीजों को देखने का यह तरीका पिट गया है। ठगाई की दुनिया में कुछ नया ईजाद हुआ ही होगा, करें। कोशिश अपनाने की। ही इज.... अ सर्जन और बूचर ?''[6]

डॉ0 आर0 पी0 अपनी उम्र संबंध और बड़प्पन का इस्तेमाल कर जिस तरह पुत्र अजय को परछाई और पुत्रवधु नेहा को शून्य में बदल देते हैं। जब किसी अनहोनी के लिए नैतिक दायित्व स्वीकारने की बात आती है तो स्वंय अदृश्य होकर हतबुद्धि बेटे के जरिए बहू आगे ठेल देते हैं, ''अभी परम्परा बदली नहीं, बदलेगी भी या नहीं। पिता का संकट बेटे पर और बेटे का संकट पत्नी पर.... रास्ता यही है, राह सार्वजनिक रुप से यहीं से होकर जाता है।''[7] डॉ0 नेहा एम0 एस0 करना चाहती है परन्तु उसके पति डॉ0 अजय व असके ससुर डॉ0 शरण भटनागर पहले उसे बच्चे को जन्म देने के लिए कहते हैं। जिसके कारण उसकी एम0 एस0 की पढ़ाई देरी से होती है। डॉ0 नेहा को डॉ0 आभा कुशल शिक्षिका की भांति प्रेरित करती है –''तुम प्रतिबद्ध डॉक्टर अपनी प्रतिभा, अपनी कुशाग्रता और अपनी लग्न की धनी स्वावलम्बी हो अपना स्वाभिमान रखो। स्वाभिमान किसी का डर नहीं मानता। पराश्रित से बंधकर आत्मनिर्भर कैसे हो सकती हो।''[8] डॉ0 नेहा डॉ0 आभा की प्रेरणा से अपनी शिक्षा पूरी करने के लिए फिर से सीनियर रेजीडेंसी ज्वाइन कर लेती है। यह डॉ0 शरण व डॉ0 अजय के इरादों के विपरीत कार्य है। इस सबंध में डॉ0 शंकर प्रसाद का कहना है, ''आज वह

पुरुष की जीवन–संगिनी या सम्पूरिका ही नहीं, प्रतिद्वन्द्विनी भी है। वह एक आर्थिक इकाई भी बन रही है और शिक्षा एवं आर्थिक स्वावलम्बन से उसे अपने विचारों की अभिव्यक्ति के विवश किया है।''[9] डॉ0 शरण अपने पुत्र अजय के लंदन जाने का बहाना करके डॉ0 नेहा की शिक्षा अधूरी छुड़वाना चाहते हैं, नेहा कहती है –''अजय मैं नहीं जा सकूंगी हरगिज नहीं।''[10] परन्तु उससे कहा जाता है, ''अजय को पढ़ने जाना है इसलिए रैजीडेंसी छोड़कर शरण आई सेण्टर जाना होगा। ''माय फुट। नहीं, मैं नहीं जाऊँगी।''[11] डॉ0 नेहा न जाने का संकल्प लेती है।

इसी उपन्यास की दूसरी पात्रा डॉ0 आभा हर आनुषिकता के विरुद्ध, अकेले और निहत्थे होकर भी संघर्ष करती है। मामला चाहे सरोज के रेप का हो या डॉ0 चोपड़ा द्वारा आपरेशन टेबल पर पड़े मरीज के सबंधियों के आर्थिक शोषण का, वह डटकर विरोध करती है। वह लड़ते–लड़ते हारकर भी नई लड़ाई के लिए ऊर्जा लेकर पुनः मोर्चे पर जुटती है। वह मानती है कि जीवन अंततः मिशन है। ''मिशन जो किसी काज के लिए होता है–महज व्यक्ति के लिए नहीं।''[12] डॉ0 आभा भारतीय समाज और परंपरा से दो–दो हाथ करती है। डॉ0 आभा को नेहा सरीखी सुविधा भोगी पीढ़ी से अलगाता है जो गुपचुप उपभोगतावादी संस्कृति के नाम पर तमाम सुख लूटकर बौद्धिक मुद्राओं के जरिए पतनशील व्यवस्था और व्यक्ति की बेनारगी पर प्रभावशाली तकरीरें देने में माहिर हैं। डॉ0 आभा के पिता जी आभा को विवाह के लिए समझाते हुए कहते हैं, ''आभा तेरी इच्छा, तेरा चलन, दृष्टांत है बेटी। मैं चाहता हूं कि तेरे यहां भी एक बेटी हो, जो तेरे जैसी हो। तेरी लगन, तेरी ईमानदारी और तेरी अनुशासन प्रियता को लेकर आगे बढ़े। हमारे समाज के पिताओं की धारणाऐं बदलें।''[13] अभिजात्य वर्ग में आभा के लिए कोई योग्य वर नहीं मिलता। अतः पिता जी आभा का विवाह बरेली शहर के लड़के मुकुल से कर देते हैं। महानगरीय दिल्ली की डॉ0 आभा विवाह के बाद बरेली की बहू बन जाती है। शादी के बाद मुकुल हनीमून मनाने जाना चाहते हैं तभी आभा का इण्टरव्यू होता है। मुकुल आभा से इण्टरव्यू छोड़ देने का कहते हैं। आभा मन ही मन सोचती है, मेरा दोष समझते हो, अपनी गलती नहीं मान रहे, मुकुल तुम अन्याय कर रहे हो।''[14] आपसी बहस के बाद मुकुल आभा की इंटरव्यू के लिए सहमत हो जाते हैं। विवाह के चार दिन बाद ही आभा वापिस दिल्ली आ जाती है। उसे नौकरी मिल जाती है। वह अपने पति के साथ अपने पिता के घर आ जाती है। मुकुल डॉ0 आभा को अलग रहने के लिए कहते हैं, लेकिन वह उसके साथ नहीं रहती। वह मुकुल से कहती है, ''सब बेकार की बातें हैं मुकुल। जड़ में तुम्हीं हो, बहू तुम्हारे घर के लिए चुनौती बन गई है, इसे झुका कर रहोगे अब यही तुम्हारा मकसद है, मेन ऐम।''[15] इस उपन्यास में डॉ0 आभा और उसके पति मुकुल के बीच माधुर्य के लिए कोई स्थान नहीं है। मुकुल चाहते हैं आभा डाक्टरी छोड़कर घर पर रहे। मुकुल आभा के साथ मारपीट करते हैं और होस्टल में रहने को कहते हैं। तब आभा कहती है, ''कब तक गरीबी की यादों से चिपके रहना चाहते हो ? पावरटी इज नोट अवर ऐम (गरीबी हमारा लक्ष्य नहीं है) वी प्रोग्रेसिव पीपुल (हम तरक्की पसंद लोग)।''[16] इस पर मुकुल श्रीराम और सीमा की उदाहरण देकर आभा को होस्टल जाने के लिए रजामन्द करने की कोशिश करते हैं। आभा मुकुल को सीधा जवाब देती हुई कहती है, ''यू कैन डू वाहट एवर यू थिंक, वट आई एम नॉट युअर सीता, अण्डरस्टैंड। (तुम जो सोचते हो, कह सकते हो लेकिन मैं तुम्हारी सीता नहीं)।''[17] एक वर्ष डॉ0 आभा अपने पति मुकुल से तलाक लेकर अलग रहने लगती है। ''पति की अनुगामिनी बनना ही तो जीवन का ध्येय नहीं। सहगामिनी होती तो बात कुछ होती।''[18]

इसी उपन्यास में डॉ0 आभा व्यभिचार के विरुद्ध आवाज बुलंद करती है। विभाग के डॉ0 अनुज वर्मा, सरोज नामक महिला से छेड़छाड़ करते है। डॉ0 आभा, अनुज वर्मा की शिकायत अपने विभाग के अध्यक्ष से करती है, ''सर इस लड़के को सजा होनी चाहिए। इसने हमारे प्रोफेशन पर कीचड़ पोत दी, आप अगर इस तरह तरह भी लें तो भी वह कल्प्रिट है। इसे औरत के नजरिये से देखें तो वह स्त्री समाज का गुनहगार है।''[19] डॉ0 पुलिस में रिपोर्ट कर देती है जो विभाग के लोग सरोज पर दबाव डालकर केस वापिस करा लेते हैं तो भी आभा इस व्यभिचार के विरुद्ध पत्रकारों और वकीलों से सलाह करके आगे की रणनीति तय करती है और वह अंत तक संघर्षरत् रहती है। 'विजन' उपन्यास में भ्रष्टाचार की समस्या का विवरण मिलता है। ''पहले आई बैंक्स की धांधलियां तो काबू में करो। कॉर्निया ग्राफ्टिंग के लिए मरीज चार बार भर्ती होकर चला जाता है। आँख बैंक में आने से पहले ही बिक जाती है....। हर जगह भ्रष्टाचार है। यहां भी लागू है। डेढ़ हजार की आंख चार हजार में भी मिले, पर मिले तो सही।''[20] डॉ0 आभा अपने विभाग में होने वाले भ्रष्टाचार का विरोध करती हुई कहती है, ''ब्लडी बगर यू बास्टर्ड। मैं बक–बक कर रही हूँ? आगे अब देखता जा मैं क्या करती हूँ। तेरी एक–एक करतूत लिखूंगी।''[21] वह इतना कहकर उनकी करतूतों को हैल्थ मिनिस्टर तक लिखने की धमकी देती है। डॉ0 आभा समस्त सुख–सुविधाओं के बीच मातमी मुद्रा में बैठकर अपनी जिंदगी की फिल्म को रिवाइंड, पौज, फारवर्ड करके नहीं देखती। दो टूक फैसला लेती है। इस पार या उस पार। वह मुकुल को अपने कैरियर के लिए छोड़ देती है।

राजेन्द्र यादव लिखते हैं, ''किसी भी स्त्री के लिए इस सच्चाई से आंख चुराना मुश्किल है कि वह एक पुरुष–वर्चस्ववादी समाज में रह रही है और बिस्तर से लेकर बस्तर तक शक्ति और संघर्ष के हजारों रणक्षेत्र उसके सामने हैं। अब यह लड़ाई किसी एक स्त्री के कुछ बन जाने या न बन जाने की नहीं रह गई, समग्र स्त्री जाति के अस्तित्व और अस्मिता की लड़ाई है।''[22] विजन उपन्यास स्त्री अस्मिता के नये आयाम खोजता और खोलता है। इस उपन्यास में लड़की की योग्यता और लड़के के समान मानने का संदेश दिया गया है। डॉ0 आभा और डॉ0 नेहा परम्परागत भारतीय नारी की छवि को तोड़ती हुई स्त्री अस्मिता की प्रतिमा है। मैत्रेयी पुष्पा ने 'विजन' उपन्यास में स्त्री के प्रतिष्ठित पद को सिंहासन रुढ़ किया है।

संदर्भ सूची

1. मैत्रेयी पुष्पा, विजन, 2002, पृ. 69
2. वही, पृ. 47
3. बलवंत कौर, स्त्री विमर्श, कृतियों में आकृतियां हंस, मार्च 2000, पृ. 95
4. मैत्रेयी पुष्पा, विजन, पृ. 4
5. डॉ0 शंकर प्रसाद, सामाजिक उपन्यास और नारी मनोविज्ञान, पृ. 44
6. मैत्रेयी पुष्पा, विजन, 2002, पृ. 47
7. वही, पृ. 207
8. वही, पृ. 136
9. डॉ0 शंकर प्रसाद, समाजिक उपन्यास और नारी मनोविज्ञान, पृ. 51
10. मैत्रेयी पुष्पा, पृ. 144
11. वही, पृ. 144
12. वही, पृ. 120
13. वही, पृ. 87
14. वही, पृ. 96
15. वही, पृ. 107
16. वही, पृ. 102
17. वही, पृ. 102

18. वही, पृ. 120
19. वही, पृ. 154
20. 20 वही, पृ. 20
21. वही, पृ. 175
22. राजेन्द्र यादव, अपनी नियति पहचानो मैत्रेयी, हंस, पृ. 4